रात्रि क्लास 22-7-68 ओमशान्ति पिताश्री शिव बाबा याद है?

तुम्हारे तरफ कौन देखते हैं? एक देखते हैं या दो देखते हैं? तुम एक को देखते हो या दो को देखते हो। (हम शिव बाबा को देखते हैं) ब्रह्मा बाबा को नहीं देखते हो? क्यों नहीं समझते हो रूहानी रूह को देखते हैं जिसमानी बाप जिस्म को देखते हैं। हम भी दोनो को देखते हैं। जिसमानी जिस्म को देखते हैं। बाबा समझते हैं हम हमेशा दोनो ही देखते हैं। उसमें उसमें ताकत जास्ती है। यही खुबी है। बापदादा दो बात करते हैं। बोलते हैं एक बाबा या दादा। उनका अवाज़ अलग इनका आवाज़ अलग होगा। दोनो का आवाज एक होता है या अलग2 होता है? यह बात कोई भी जानते नहीं। बाप निराकार इस रथ में आते हैं। वह फिर कृष्ण उस रथ पर बैठ दिखाया है। वह रांग है। बाप दादा दोनो की यह आंखें हैं ना। ऐसे नजदीक हैं तब भी दादा को बाप को याद करना है तो पाप कट जाये। फिर भी घड़ी2 भूल जाता हूं। अगर यह याद रहे हम दोनो ही बच्चों को देखते हैं सदैव याद रहे तो बहुत अच्छा। परन्तु माया भूला देती है। माया सिर्फ याद की यात्रा में बिघ्न डालती है। भाषण में कोई पाय्न्ट भूल जाते हैं वह माया नहीं भूलाती। तुम भूल जाते हो। माया सिर्फ याद भूलाती है। बाप देखते हैं तो दोनो की नजर जाती है। दोनो की नजर में ताकत रहती है। बाबा को याद भी पड़ता है मुख्य है भी याद की बात। बाबा कुछ आर्शीबाद नहीं करते। टीचर पढ़ाते हैं यह आर्शीबाद थोड़े ही है। टीचर तो पढ़ावेंगे ना। आर्शीबाद थोड़े ही करेंगे। बाप को बुलाते हैं आकर पावन बनाओ। पावन बनने का रास्ता बताओ। तो उस पुरुषार्थ में ही माया बिघ्न डालती है। हराये देती है किसको। बच्चों को दैवीगुण भी धारण करनी है। एक दो में प्यार बहुत चाहिए। इसलिए दिखाते हैं शेर-बकरी का भी लव रहता है। ऐसे है नहीं। वहां शेर-बकरी होते ही नहीं। स्वर्ग में बकरी होंगी? (नहीं) किचड़ाकरने वाली चीज होती ही नहीं। यहां तो बिमारियां आद वृद्धि को पाती रहती है। दुनिया जितना पतित होती है उतनी ही गंदी चीजें निकलती रहती हैं। अच्छा मीठे मीठे सिकीलधे रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को नमस्ते।

रात्रिक्लास 23-7-68:- बच्चों को समाचार सुनाया जाता है तो शोक हो। कैसे2 सर्विस करते हैं। रूहानी सेवा तो करनी ही है। बाप आये हैं सभी रूहों की सर्विस करने और पतित से पावन होने का रास्ता बताने। और बहुत सहज। याद भी सहज। कब भी योग अक्षर न कहना। नहीं तो हठयोगी बैठ बहुत प्रश्न पूछेंगे। कोई आते भी हैं जास्ती बात करने की दरकार नहीं। नामी ग्रामी से मालूम पड़ जाता है। पूछा जाता है तुम्हारी आत्मा का बाप कौन है? जितनी मनुष्य उतनी हीमतें। तुम ब्राह्मण झट कहेंगे हमारा बाप तो है ऊंच ते ऊंच शिव बाबा। निराकार भी वह है। उनको ही बेहद का बाप सिध करना है। बेहद का बरसा देता है। आते भी हैं जरूर। यह भी बताना है शिवरात्रि किसकी मनाते हैं। शिवरात्रि का अर्थ तो बिचारे समझते ही नहीं हैं। तरस पड़ता है कुछ भी नहीं समझते हैं। क्योंकि है ही भक्ति मार्ग। ज्ञान है नई बात। नई दुनिया के लिए सभी कुछ नया। बाप ही बैठ समझाते हैं। और कोई जान भी नहीं सकते। बिल्कुल नई बात है। वह है ही भक्ति, यह है ज्ञान। सारी दुनिया में है भक्ति। बाकी तुम मुठ भर हो जिनको बाप ज्ञान देते हैं। और वृद्धि को पाते हो। भक्ति का सारा झाड़ है। तुम कितने थोड़े हो। बाप ने समझाया है जिन्हों ने कल्प पहले समझा है वही समझेंगे। तुम फिक्र मत करो। बहुतों से तुमने मेहनत की है। मुश्किल कोई ठहरते हैं। माया पैर झट उखाड़ देती है। लड़ाई का मैदान है। तुमको जो सिखाया जाता है वह है राईट। समझाया जाता है अपने को आत्मा समझो। देह समझना रांग है। ड्रामा अनुसार यह भी भूल नुंधी हुई है। बाप दोष नहीं देते हैं। समझाते हैं। देहीअभिमानी थे तो विकर्म नहीं बनते थे। देह अभिमान होने से विकर्म बनते हैं। यह है ही रावण का राज्य। आगे भी पुरानी दुनिया का विनाश हुआ था। अनेक धर्मों का विनाश एक धर्म की स्थापना' तुम राजयोग सीख रहे हो। बाकी सभी धर्म खत्म हो जायेगा। अभी तो वह एक धर्म है नहीं। बाकी अनेक धर्म हैं। बाप को कोई भी तकलीफ नहीं होती हैं। अनेक बार ब्राह्मण धर्म और सूर्यवंशी चन्द्रवंशी धर्म स्थापन हुई है। नई बात नहीं। बाकी हां असुरों के बिघ्न आद

पड़ते हैं। विकारों पर आधाकल्प की हेर पड़ी हुई हैवह छोड़ना कम नहीं हैं। और यह है याद की यात्रा। याद करने से जन्म जन्मान्तरके विकर्म विनाया होंगे। याद करते करते पवित्र बन जावेंगे। फिर कुद पड़ेंगे। ऐसे नहीं बाबा कोई नयनों पर बिठाकर ले जावेंगे। पवित्र होना है जरूर। पवित्र नई दुनिया स्थापन होनी है। तुम भी समझते होबाबा भी जानते हैं अनेक बार राज्य लिया और गंवाया है। अभी भी तुमपुरुषार्थ करते रहते हो। माया के विघ्न भी बहुत पड़ते हैं। कर्मबन्धन भी विघ्न है ना। इन से भी पार होना है। बाबा ऐसे नहीं कहते घर छोड़ो। द्रोपदियां नंगन होती हैं। कैसे पुकारती हैं। बचाओ नंगन होने से। सीढ़ीमें अच्छी रात दिखाया गया है। नई बात नहीं। हमने 84 का चक्र कितना बारी लगाया है। अति ईन्दियसुख त्यागता है। बेहद का बाप जरूर बेहद का ही राज्य देंगे। इसमें मुंडने की दरकार ही नहीं। सन्यासियों के बहुत साग्रद फॉलोअर्स बहुत होते हैं। उनको न मंगाओ न निमंत्रण दो। अभी देरी है। पिछाड़ीमें जब तुम बहुत वृधि को पावेंगे तब यह आवेंगे। उन्हों की भक्ति मार्ग की कैसी राजाई है। राजाई ऐसे ही थोड़े ही जावेंगी। तुम्हारी भी वृधि हो जाये तब बात। अभी तो सन्यासियों आद को निमंत्रण न दो। आदी सनातन धर्म वालों को भल दो। सिर्फ आदी सनातन देवीदेवता धर्म वालीहिन्दु कहदेते हैं। हिन्दुधर्म कोई ने स्थापन किया ही नहीं हैं। बच्चों को जल्दीमाया नहीं मारना है। मुख्य है याद की यात्रा। वही तुम घड़ी2भूलते हो तब ही भूलें होती हैं। विकार कीभूल हुई खेल हीखलास। काला दाग आ जाता है। मेहनत बहुत ही लगती है। गिरते भी इसमें ही हैं। यह है सहज ज्ञान। 84 का चक्र पूरा हुआ अभी घर चलो। सभी को बोलो नई दुनिया स्थापन हो रही है। पवित्र बनने बिगर जा नहीं सकेंगे। याद से ही पवित्र बनो नहीं तो सजाएं खानी पड़ेंगी। बाप जो विश्व की बादशाही देते हैंउनको याद करना क्यों नहीं चाहिए। हर 5000वर्ष बाद बाप ही आकर पढ़ाते हैं। यह और कोई जानते ही नहीं। बच्चे कहते हैं यह टाईम बड़ा अच्छा है। हम ईश्वरीय परिवारके हैं। आसुरी परिवार से ईश्वरीय परिवार के बनते हैं। फिर बनते हैं दैवी परिवार के। यह चक्र बाजोली बुधि मेंरखो। 5विकारों को भी वस करना है। यह 5विकार तुम्हारे पाकेट काट लेते हैं। तुम उनको छोड़ने चाहते हो। यह तुमकोबहुत ही तंग करते हैं। आजकल पाकेट बहुत काट लेते हैं। चोरी-चकारी बहुत हैं। इसलिए खबरदारीरहना चाहिए। तुम गरीब बच्चों के पैसे मोस्ट वैल्युएबुलहैं। तुम ब्राहमणों के यह पैसे ही अपनी राजाई स्थापन करने में लगानी है। राज्य भी तुम लेते हो। तुमको योगबल से विश्व की बादशाहीमिलती हैं। बाहूंबल से मिल न सके। बाहुबल के बहुत हैं। तुम्हारी है सायलेन्स बल। औरबुधि का योग बाप से लगाना यह है सत का संग।

सद्गुरु निहाल करते हैं बाकी सभी गुरु बेहाल करते हैं। बाप है सर्वशक्तिवान उनको याद करने से तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान बनती है। तो बाप को बहुत याद करना है। सिर्फ याद नहीं। सर्विस में भी रहना है। नहीं तो समझना है हम इतना ऊंच पद नहीं पा सकते हैं। मेहनत बिगर फल मिलता है क्या। यह है गुप्त मेहनत। तुम अन नोन वारियर्स हो। यह सूर्यवंशी बनते हैं। हथियार कुछ भी नहीं हैं। राम फेल हुआ है इसलिए हाथ में बाण आद दे दी है। चन्द्रवंशी में चला गया। देह अभिमान में आने से कोई न कोई भूल जरूर होती हैं। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप दादा का याद प्यार गुडनाईट। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते। नमस्ते।

डायरेक्शन :-

लखनऊ में एक नया सेन्टर खुला है जिसकी एड्रेस भेज रहे हैं :-

BRAHMA KUMARIS
Sardar nanik Singh Building
Opp. K.K. College
1st. A.P. Sen Road
LUCKNOW- (u.p.)